IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुंदेलखंड के किसानों की समस्याएं

शोधार्थिनी
आरती मौर्या
शोध छात्रा
समाजशास्त्र विभाग
श्री दुर्गा जी पी0 जी0 कालेज
चण्डेश्वर, आजमगढ़ उ0प्र0

शोध सारांश –

यह शोध पत्र प्रस्तुत करने का उद्देश्य आप सभी का ध्यान बुंदेलखंड की तरफ आकर्षित करना है।बुंदेलखंड जो अपने गौरवशाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व प्राकृतिक संसाधनों के लिए हमेशा से विख्यात रहा है। लेकिन समय–समय पर बढ़ रहे मानवीय हस्तक्षेप प्राकृतिक संसाधनों के लिए समस्या का विकराल रूप धारण कर रहा है जिसके चलते खेती किसानी भी प्रभावित होती रही है।

बुंदेलखंड जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों से मिलकर बना है यहां हमेशा से ही सूखा व पानी की समस्या बनी रहती है इसके लिए समस्या कहीं न कहीं यहां की जलवायु परिवर्तन और औसत वर्षा की कमी है वर्षा की कमी के कारण बार–बार सूखा की स्थिति बनी रहती है यदि हम बुंदेलखंड की भौगोलिक संरचना की बात करें तो यहां की पठारी इलाके और अनुपजाऊं पथरीली भूमि यहां की कृषि के लिए अनुपयोगी है। भूमि क्षरण के कारण लाखों हेक्टेयर भूमि कृषि कार्य के लिए उपयुक्त नहीं है।

यहां अधिकतर लोग गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन करते हैं जिसमें किसानों का एक बड़ा हिस्सा सीमांत किसानों का है कुछ वर्षों से मानसून में हो रहे उतार–चढ़ाव यहां की कृषि की पूरी तरह नष्ट कर दिया है, जलवायु परिवर्तन के चलते यहां कुछ किसान विगत कई सालों से बुवाई तक नहीं कर पाए हैं।

कृषि में हो रहे उतार–चढ़ाव के कारण किसानों की समस्या बढ़ती जा रही है और किसानों में आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं हर रोज किसी न किसी समस्या के चलते आर्थिक तंगी के कारण किसान आत्महत्या कर रहे हैं। आज हम सभी लोग किसान आत्महत्या से परिचित हैं लेकिन आज हम आपको बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों की समस्याओं से अवगत कराना चाहते हैं। काल्पनिक जगत से हटकर अब हम कुछ यथार्थ की चर्चा करेंगे। आप किसान आत्महत्या और सर्वाधिक जल संकट वाले क्षेत्र बुंदेलखंड से शायद रूबरू होंगे यहां अप्रैल वर्ष 2003 से मार्च 2015 तक 3280 किसान आत्महत्या किए हैं। समय–समय पर इन मुद्दों को किसान आंदोलन, बेमौसम बारिश और ओलों से हलकान किसान परिवारों ने जिंदा किया है। वर्तमान समय में किसानों की संख्या घट रही है जिनकी अपनी खेती जमीन हुआ करती थी और ऐसे किसानों की संख्या बढ़ रही है जो दूसरों की जमीन किराए पर लेकर खेती कर रहे हैं इन किराएदार किसानों में से 80 : किसान कर्ज में डूबे हुए है। किसान तो कम हो ही रहे हैं साथ ही बेहतर और लाभकारी आजीविका की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं पिछले कुछ वर्षों में घर के

पुरुषों के अतिरिक्त सारा परिवार ही पलायन करने लगा है। विगत कुछ वर्षों से बुंदेलखंड में जलवायु परिवर्तन के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं अंग्रेजी शासन में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जो वन अधिग्रहण और साथ–साथ तथाकथित वैज्ञानिक प्रबंधन जिसका पतन वन विनाश के साथ–साथ प्रारंभ हुआ था 1947 के बाद स्वशासन में उसका विकराल रूप बड़े पैमाने पर वन की कटाई उद्योग के नाम पर पहाड़ों का उत्खनन तथा नदियों पर बांध बनाने की होड़ के रूप में प्रकट हुआ, यहां की प्राकृतिक संपदा ही यहां की बर्बादी का कारण बन गई।

बुंदेलखंड के लगभग सभी जिले सूखे से प्रभावित रहे हैं जो देश का सबसे समृद्ध इलाका हुआ करता था दुर्भाग्य से वह आज देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में शुमार हो चुका है। सतही जल और भूजल में गिरावट की वजह से क्षेत्र के लगभग 70ः तालाब कुएं और बावड़ियां आदि सभी सुख चुके हैं। सूखे का प्रभाव चारों ओर देखने को मिल रहा है जिसकी वजह से भुखमरी, आत्महत्या, पलायन और यहां तक कि अपनी औरतों को गिरवी रखने जैसी शर्मनाक घटनाएं सामने आई है।

वहीं दूसरी तरफ अनिश्चितता को और बढ़ाते हुए 2011 और 2013 में हुई भारी बारिश की वजह से किसानों के खेतों में भारी जल भर गया जिससे कई किसानों की खड़ी फसलों को काफी नुकसान हुआ। इस तरह सूखे से पीड़ित बुंदेलखंड में अचानक भारी बारिश ने राहत की जगह उनकी दुर्दशा को और बढ़ा दिया। लगातार सूखा, अनिश्चित बारिश, फसलों के लगातार नुकसान, सिंचाई सुविधा का अभाव, खेती और दूसरे कार्यों हेतु लिये गए कर्ज सामाजिक स्थिति का पतन और परिवार के भविष्य की चिंता ने किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर किया है। क्षेत्र के अधिकांश किसान खेती और मजदूर स्थिति में सुधार ना होने के कारण लगातार कर्ज होते चले गये जिसके कारण उनके लिए इस गरीबी के दुष्चक्र से बाहर आना मुश्किल हो गया है।

बुंदेलखंड में किसानों की समस्याओं की निम्नलिखित कारण है जो इस प्रकार है–

1– मृदा अपरदन और पथरीली भूमि– बुंदेलखंड की भूमि पथरीली होने के कारण उपजाऊ भूमि का एक बड़ा भाग हवा और पानी द्वारा मिट्टी के क्षरण से पीड़ित है। अत्यधिक वर्षा तथा अत्यधिक सूखा दोनों ही मृदा अपरदन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। खेती में लगाई गई लागत बड़ी मुश्किल से निकल पाती है परंतु मेहनत नहीं निकलती।

2–सिंचाई के लिए पानी की समस्याएं– आज वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन का खतरा एक गंभीर रूप धारण कर चुका है, जलस्तर नीचे गिरता चला जा रहा है किसानों द्वारा जो फसलें बोई जाती है उनके लिए पानी बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन अनियमित बारिश की समस्या ही फसलों के लिए पानी की कमी की समस्या बन जाती है जो किसानों के लिए परेशानी का कारण बन जाती है।

3– नई पीढ़ी में कृषि के प्रति रुचि का अभाव– बुंदेलखंड के किसान परिवारों से बात करने पर पता चलता है कि खेती से हो रहे घाटे व संसाधनों के अभाव के कारण नई पीढ़ी किसानी का कार्य नहीं करना चाहती और साथ ही घाटे की खेती का मार झेल रहे किसान अपने बच्चों को खेती किसानी में नहीं लगाना चाहते, हालांकि आज जो कृषि देश का 49 प्रतिशत रोजगार उपलब्ध करा रही है आने वाले समय में यह बड़ी समस्या बन सकती है।

4–बिखरी हुई छोटी जोत – वर्तमान समय में सबसे बड़ी किसानों की समस्या कृषि जोत का बिखरा व कम होते जाना है। कृषि जोत का कम होना या असमान वितरण और छोटे किसानों की अधिक संख्या एक ऐसी समस्या है जिसका हल ढुंढ पाना एक कठिन कार्य है।

5– सूखे की समस्या – बुंदेलखंड में सूखे की स्थिति हमेशा बनी रहती है यहां एक दो साल के अंतराल में सूखे की समस्या का सामना करना पड़ता है जिसके चलते साल दर साल फसल बर्बाद हो जाती है या फिर बुवाई ही नहीं हो पाती सूखे के कारण किसान बेहाल हो जाता है। क्योंकि उसके जीविका का यही एकमात्र साधन होता है किसान करे तो क्या करें अंत में कोई रास्ता ना दिखाई देने पर आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध को अपना लेता है।

6–सरकारी योजनाओं की विफलता– सरकार द्वारा किसानों के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं पर उनका पूरा लाभ उन तक नहीं पहुंच पाता है इसके लिए किसानों में योजनाओं के प्रति जागरूकता की कमी है और यदि जागरूकता है भी तो भ्रष्ट अफसरों और कागजी झंझटों का सामना भी करना पड़ता है। किसान परिवार तो कभी–कभी सरकारी योजनाओं के चक्कर काट–काट के अंत में थकहार कर बैठ जाता है।

7–कृषि में निवेश का अभाव– बुंदेलखंड क्षेत्र में कृषि क्षेत्र में निवेश की कमी को देखा जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि कृषि अस्थिरता का मूल कारण भूमि असमानता व कृषि जोत का कम होना है यह तर्क दिया जाता है कि खेती की व्यवस्था के तहत मकान मालिक, किराएदार आदि के सभी खर्चों का वहन किया जाता है और किरायेदारों में निवेश योग्य संसाधनों की कमी होती है जो कृषि उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

कृषि में निवेश करना अन्य विचारों में निवेश की तुलना में कम लाभदायक होता है अन्य किसी व्यवसाय में निवेश करने पर उच्च रिटर्न देने वाले सिद्ध होते हैं जिसके परिणाम स्वरूप कृषि में निवेश की कमी हुई और इस क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ।

उपसंहारः

बुंदेलखंड क्षेत्र में किसानों से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए किसानों को कृषि से संबंधित संसाधनों की व्यवस्था करनी पड़ेगीं कई प्रयासों के बावजूद भी कोई सुसंगत कृषि नीति नहीं बनी है जो उनके हित में कार्य करें कृषि की गुणवत्ता और स्थिरता व उत्पादकता में वृद्धि के मुद्दों को लेकर एक सुसंगत कृषि नीति पर एक व्यापक समझौते की आवश्यकता है।
कृषि से संबंधित प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। छोटे सिंचित क्षेत्र जिस पर नीति निर्माताओं द्वारा कम ध्यान दिया जाता है लेकिन यदि वास्तविकता को देखा जाए तो कुएं, बाढ़ नियंत्रण और सूखे की कमी के रिचार्जिंग के लिए छोटे सिंचाई परियोजनाएं बहुत महत्वपूर्ण है।

आज के किसान कड़ी मेहनत के बाद भी दिनहीन अवस्था में होते हैं अधिकांश किसान जीवित नर कंकाल जैसे प्रतीत होते हैं । इसका मूल कारण अवैज्ञानिक तरीके से की जा रही खेती है यह अपनी खेती के लिए वर्षा पर ही निर्भर रहते हैं। अब दुनिया के अन्य देशों में किसान हमारे यहां के किसानों से कम मेहनत और वैज्ञानिक पद्धति द्वारा खेती करके कृषिकार्य में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर रहे है। अब हमारे देश विशेषकर बुंदेलखंड जैसे क्षेत्र में कृषि को लेकर शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए , उन्हें उचित संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. बुन्देलखंड रिसर्च पोर्टल।
2. ग्रामीण समाजशास्त्र, डॉ0 जी0 के0 अग्रवाल, डॉ0 एस0 एस0 पाण्डेय ।
3. डाउन टू अर्थ ।
4. समाचार पत्र न्यूज 18 हिन्दी जनवरी 2012।
5. भारतीय किसान दशा और दिशा, किशन पटनायक।
6. एस0 सी0 दूबे इण्डियन विलेज, एलाइड पब्लिशर 1955।
7. राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड व्यूरो रिपोर्ट ।